सोहराई व कोहबर चित्रकला

चर्चा में क्यों?

17 सितिंबर, 2021 को झारखंड के राज्यपाल रमेश बैस ने रांची स्थति राजभवन में डाक वभिाग द्वारा**सोहराई** एवं **कोहबर चित्रकला** पर जारी एक **वशिेष लफिापे का लोकार्पण** कयिा।

प्रमुख बदिु

- **सोहराय व कोहबर कला झारखंड** की **दो मुख्य लोककला** है। यह दोनों चित्रकला **मानव सभ्यता के वकिास** को दर्शाती है।
- इन दोनों चित्रकला में **नैसर्गकि रंगों** का उपयोग कयिा जाता है। यह कला **हजारीबाग और चतरा** में मुख्य रूप से ज़्यादा प्रचलति है।
- झारखंड के अनेक ज़लिों में कोहबर एवं सोहराई की समृद्ध परंपरा रही है। संभवत: आज की कोहबर कला झारखंड में पाए जाने वाले सदयिों पुराने गुफाचित्रों का ही आधुनकि रूप है। हजारीबाग के कोहबर चित्रकला के चतिेरे मुख्यत: आदवािसी हैं।
- मट्टिी की दीवारों पर बनाए जाने वाले चित्रण महलिाओं द्वारा बनाए गए हैं। यह चित्रण बहुत ही कलात्मक और इतने स्पष्ट होते हैं कि आसानी से पढ़े जा सकते हैं।
- कोहबर के चित्रों का वषिय सामान्यत: **प्रजनन, स्त्री-पुरुष संबंध, जादू-टोना** होता है, जनिका प्रतनिधित्वि पत्तयिों, पशु-पक्षयिों, टोने-टोटके के ऐसे प्रतीक चह्निों द्वारा कयिा जाता है, जो वंश वृद्धि के लयि प्रचलति एवं मान्य हैं, जैसे- बाँस, हाथी, कछुआ, मछली, मोर, कमल या अन्य फूल आदि। इनके अलावा शवि की वभिन्नि आकृतयिों और मानव आकृतयिों का प्रयोग भी होता है। ये चत्रि घर की बाहरी अथवा भीतरी दीवारों पर पूरे आकार में अंकति कयि जाते हैं।
- हजारीबाग ज़लि के जोरकाठ, इस्को, शंरेया, सहैदा, ढेठरगि, खराटी, राहम आदि गाँवों में कोहबर चत्रिांकन सदयिों से होता आ रहा है।
- सोहराई चत्रिों में दीवारों की पृष्ठभूमि मट्टिी के मूल रंग की होती है। उस पर कत्थई राल, गोद (कैओलीन) और काले (मैंगनीज) रंगों से आकृतयिाँ बनाई जाती हैं। कोहबर एवं सोहराई चत्रिों में वभिन्नि आदवािसी समूह या उपजाति के अनुसार, थोड़ी भन्निता पाई गई है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sohrai-and-kohbar-painting